सतर्कवाणी संस्करण VIII, 2022

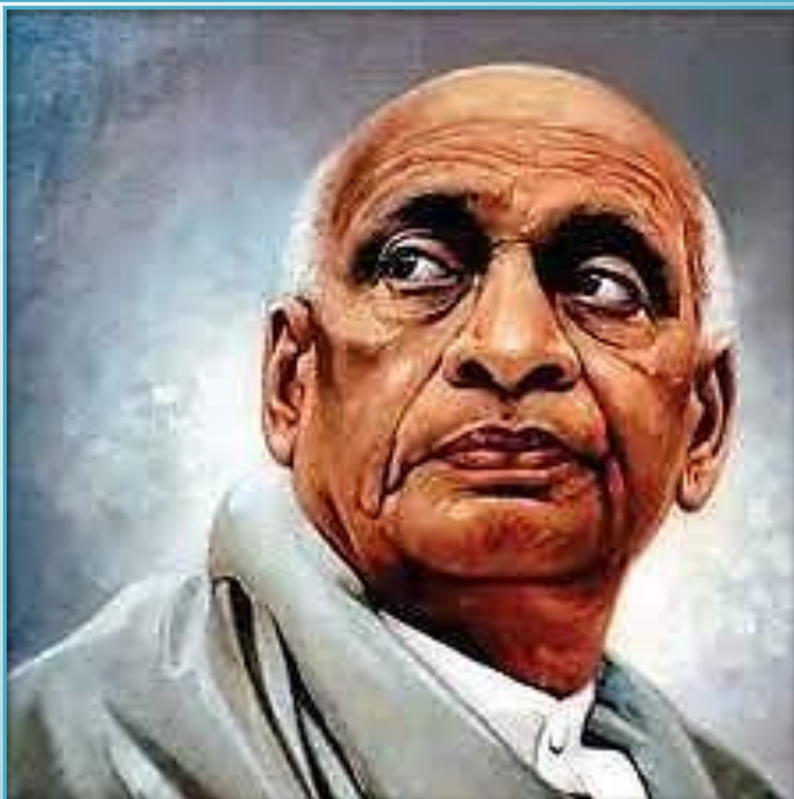

भ्रष्टाचार मुक्त भारत - विकसित भारत

Corruption Free India for a Developed Nation.

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
16वीं मंज़िल, जवाहर व्यापार भवन, जनपथ, नई दिल्ली – 110001

Security Printing & Minting Corp. of India Ltd.
16th Floor, Jawahar Vyapar Bhawan, Janpath, New Delhi - 110001

॥महात्मा गांधी॥

"दुनिया में आप जो बदलाव देखना चाहते हैं, वह बनें"

"Be the change you want to see in the world"

सतर्कता पत्रिका
सतर्कवाणी संस्करण VIII, 2022
Vigilance Magazine
Satarkvani, Edition VIII, 2022

C R E D I T S

- Custodian

Shri Vinay Kumar Singh
CVO, SPMCIL

- Chief Editor

Shri S. P. Gandam
Dy. CVO

- Editor

Shri Amitabh Shah
DGM (Vigilance)
Nihan Siddiqui
Supervisor (Vigilance)

DISCLAIMER

The content of this publication is only indicative and is by no means exhaustive. Nor it is intended to be a substitute for rules, procedures and existing instructions/guidelines on the subject. The provisions herein do not in any way supersede the rules & provisions of CVC/SPMCIL. The primary purpose of this publication is for reference only in SPMCIL and should not be produced in any court of law. The views expressed in the articles are of the authors in their private capacity and do not in any way represent the views of the Department.

CONTENTS

Particulars	Page No.
Integrity Pledge	06
CMD's Message	07
CVO's Message	08
Brief History of VAW	09
Article on Ethics	10
Four Facets of Vigilance Working	14
Article on Participative Vigilance	22
Nature of Corruption	29
Ways to Reduce Corruption	33
Guidelines Issued by Vigilance Department	36

Particulars	Page No.
सकारात्मक गुणों का विकास	40
हमारा संस्थान	45
Award Winning Essay of VAW-2021	48
एक दूजे के साथ	53
केंद्रीय सतर्कता आयोग	55
Vision and Mission of Vigilance Department	60
Repatriation from Vigilance Department	63
New Joinees of Vigilance Department	64
CHO Vigilance Team	65
Quiz	66

प्रतिज्ञा/ Pledge

मेरा विश्वास है कि हमारे देश की आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक प्रगति में भ्रष्टाचार एक बड़ी बाधा है। मेरा विश्वास है कि भ्रष्टाचार का उन्मूलन करने के लिए सभी संबंधित पक्षों जैसे सरकार, नागरिकों तथा निजी क्षेत्र को एक साथ मिल कर कार्य करने की आवश्यकता है।

मेरा मानना है कि प्रत्येक नागरिक को सतर्क होना चाहिए तथा उसे सदैव ईमानदारी तथा सत्यनिष्ठा के उच्चतम मानकों के प्रति वचनबद्ध होना चाहिए तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष में साथ देना चाहिए।

अतः मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि :-

- जीवन के सभी क्षेत्र में ईमानदारी तथा कानून के नियमों का पालन करूंगा;
- ना तो रिश्वत लूंगा और ना ही रिश्वत दूंगा;
- सभी कार्य ईमानदारी तथा पारदर्शी रीति से करूंगा;
- जनहित में कार्य करूंगा;
- अपने निजी आचरण में ईमानदारी दिखाकर उदाहरण प्रस्तुत करूंगा;
- भ्रष्टाचार की किसी भी घटना की रिपोर्ट उचित एजेन्सी को दूंगा ।

I believe that corruption has been one of the major obstacles to economic, political and social progress of our country. I believe that all stakeholders such as Government, citizens and private sector need to work together to eradicate corruption.

I realize that every citizen should be vigilant and commit to highest standards of honesty and integrity at all times and support the fight against corruption.

I, therefore, pledge:

- *To follow probity and rule of law in all walks of life;*
- *To neither take nor offer bribe;*
- *To perform all tasks in an honest and transparent manner;*
- *To act in public interest;*
- *To leady by example exhibiting integrity in personal behaviour;*
- *To report any incident of corruption to the appropriate agency.*

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
मिनिरत्न श्रेणी-I, सीपीएसई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Limited
Miniratna Category-I, CPSE
(Wholly owned by Government of India)

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
Chairman & Managing Director

संदेश

मुझे अपार हर्ष हो रहा है कि केन्द्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशानुसार एसपीएमसीआईएल में **'भ्रष्टाचार मुक्त भारत – विकसित भारत'** विषय के साथ दिनांक 31.10.2022 से 06.11.2022 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का अनुपालन किया जा रहा है ।

भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई में जितना महत्त्व निगरानी तंत्र, संस्थाओं और कानूनों का है, उससे भी कहीं अधिक आवश्यकता है इसमें लोगों की भागीदारी बढ़ाने की । भ्रष्टाचार के खिलाफ जब तक आम जनता जागरूक नहीं होगी, भ्रष्ट गतिविधियों का विरोध नहीं करेगी, तब तक केवल कानूनों के माध्यम से भ्रष्टाचार को समाप्त नहीं किया जा सकता है।

हर प्रकार के भ्रष्टाचार से समाज को बहुत क्षति पहुँचती है। भ्रष्टाचार में लोग अपने निजी लाभ के लिए देश की संपत्ति का शोषण करते हैं। अपना काम भी ईमानदारी से नहीं करना भ्रष्टाचार है। सरकार द्वारा सरकारी सेवाओं को ऑनलाइन करना भ्रष्टाचार को कुछ हद तक सीमित कर पाई है। हमें अपने निगम को भ्रष्टाचार मुक्त करने का हर संभव प्रयास करना चाहिए।

मैं मुख्य सतर्कता अधिकारी एवं उनकी टीम द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करती हूँ तथा कार्यक्रमों की सफलता के लिए शुभकामनाएँ प्रदान करती हूँ ।

तृप्ति घोष
(तृप्ति पी. घोष)

16वीं मंजिल, जवाहर व्यापार भवन, जनपथ, नई दिल्ली–110001
16th Floor, Jawahar Vyapar Bhawan, Janpath, New Delhi - 110001
फोन. / Tel.: +91-11-23701220, 43582220, फैक्स / Fax :+91-11-43582276
ई–मेल / E-mail : cmd@spmcil.com, वेब. / Web.: www.spmcil.com
CIN : U22213DL2006GOI144763

हिंदी आसान है, इसका प्रयोग बढ़ाइए

विनय कुमार सिंह, भा.रा.से.
Vinay K. Singh, I.R.S.
मुख्य सतर्कता अधिकारी
Chief Vigilance Officer

सत्यमेव जयते

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
(वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.
(Under Ministry of Finance, Govt. of India)

संदेश

प्रत्येक वर्ष सर्व-सत्यनिष्ठ महापुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती के अवसर पर सतर्कता जागरूकता सप्ताह (VAW) मनाया जाता है। केंद्रीय सतर्कता आयोग ने इस वर्ष **"भ्रष्टाचार मुक्त भारत – विकसित भारत"** विषय पर दिनांक 31.10.2022 से 06.11.2022 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाने का निर्णय लिया है।

'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' भ्रष्टाचार के खतरों के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने के लिए आयोग के उपकरणों में से एक है। प्रत्येक देश अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता तथा चरित्र के कारण पहचाना जाता है। भारत जैसा देश अपनी सत्यता, ईमानदारी, अहिंसा, धार्मिकता, नैतिक मूल्यों तथा मानवतावादी गुणों के कारण विश्व में अपना अलग ही स्थान रखता है। परंतु आज के समय में भ्रष्टाचार देश के विकास में बाधा बन रहा है।

अत: यदि हम वास्तव में अपने देश, समाज और संपूर्ण मानवता की प्रगति और विकास चाहते हैं तो इसके लिए हमें हर संभव उपाय करके सर्वप्रथम भ्रष्टाचार का उन्मूलन करना चाहिए, तब ही हम चहुँमुखी विकास और प्रगति के अपने स्वप्न को साकार कर सकेंगे।

इस सप्ताह के दौरान, केंद्रीय सतर्कता आयोग के दिशा-निर्देश के अनुपालन में गृहप्रबंधन गतिविधियों पर ज़ोर दिया जा रहा है । इसके अलावा सप्ताह के दौरान भ्रष्टाचार विरोधी उपायों पर सार्वजनिक जागरूकता हेतु विभिन्न कार्यक्रम यथा - व्याख्यान, वाद विवाद प्रतियोगिता, कार्यशाला, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जा रहा है।

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी एसपीएमसीआईएल सतर्कता विभाग इस सप्ताह के दौरान अधिकारियों तथा कर्मचारियों की सृजनात्मक ऊर्जा को मूर्त रूप देने एवं उनकी साहित्यिक प्रतिभा को प्रदर्शित करने के लिए गृहपत्रिका "सतर्कवाणी" भी प्रकाशित कर रहा है। पत्रिका में शामिल रचनाकारों, प्रकाशन टीम के सभी सदस्यों को इसके सफलतापूर्ण प्रकाशन के लिए साधुवाद।

सादर,

(विनय कुमार सिंह)

16 वीं मंजिल, जवाहर व्यापार भवन, जनपथ, नई दिल्ली – 110 001
16th Floor, Jawahar Vyapar Bhawan, Janpath, New Delhi-110 001
फोन / Tel. : 91-11-43582260 फैक्स / Fax : 91-11-43582202, ई-मेल / E-mail : cvo@spmcil.com
वैब / Web : www.spmcil.com
CIN : U22213DL2006GOI144763

Vallabhbhai Jhaverbhai Patel
(31 Oct 1875 – 15 Dec 1950)

The Central Vigilance Commission on 31st October 2000 **introduced the practice of observing the week starting from the birthday of Sardar Vallabhbhai Patel as the Vigilance Awareness Week.** This was an effort at making the employees of the Government of India organisations aware of the dangers and harm caused by corruption, which is anti poor, anti development and anti national.

31st October was chosen as the date as it is the birthday of Sardar Vallabhbhai Patel, one of the great leaders of our country, who is an outstanding icon and role model for patriotism, political integrity, visionary but highly pragmatic leadership and value based politics. **The birthday of Sardar Patel, the Bismarck of India, was deliberately chosen** because during the freedom struggle, Sardar Patel was the leader who did all the demanding hard work not visible in the public eye of raising resources and organising the political movement .This task called for, absolute integrity, an excellent capacity for management and inspiring leadership.

ETHICS

Sh. S. P. Gandam
Deputy CVO

Many people tend to equate ethics with their feelings, but being ethical is clearly not a matter of following one's feelings. A person following his or her feelings may recoil from doing what is right. In fact, feelings frequently deviate from what is ethical.

I. Nor should one identify ethics with religion. Most religions, of course, advocate high ethical standards. Yet if ethics were confined to religion, then ethics would apply only to religious people. But ethics applies as much to the behaviour of the atheist as to that of the devout religious person. Religion can set high ethical standards and can provide intense motivations for ethical behaviour. Ethics, however, cannot be confined to religion nor is it the same as religion.
II. Being ethical is also not the same as following the law. The law often incorporates ethical standards to which

most citizens subscribe. But laws, like feelings, can deviate from what is ethical.

III. Being ethical is not the same as doing "whatever society accepts." In any society, most people accept standards that are, in fact, ethical. But standards of behavior in society can deviate from what is ethical. An entire society can become ethically corrupt. Nazi Germany is a good example of a morally corrupt society. Moreover, if being ethical were doing "whatever society accepts," then to find out what is ethical, one would have to find out what society accepts.

2. What, then, is ethics?

Ethics is two things.

First, ethics refers to well-founded standards of right and wrong that prescribe what humans ought to do, usually in terms of rights, obligations, benefits to society, fairness, or specific virtues. Ethical standards also include those that enjoin virtues of honesty, compassion, and loyalty. And, ethical standards include standards relating to rights, such as the right to life, the right to freedom from injury, and the right to privacy. Such standards are adequate standards of ethics because they are supported by consistent and well-founded reasons.

Secondly, ethics refers to the study and development of ...

one's ethical standards. As mentioned above, feelings, laws, and social norms can deviate from what is ethical. So it is necessary to constantly examine one's standards to ensure that they are reasonable and well-founded.

Ethics also means, then, the continuous effort of studying our own moral beliefs and our moral conduct, and striving to ensure that we, and the institutions we help to shape, live up to standards that are reasonable and solidly-based.

3. **Finally,** Ethics is a set of moral principles/ values which governs the conduct of an individual or an organization. Ethics is nothing but doing the right things. In a situation of dilemma or conflict of interest, one has to be able to choose the right path at all costs. Ethics is required for improved accountability, better governance, sustained economical growth of an organization and to enhance Integrity. Ethical practices involve are not to do anything un-becoming of yourself as an employee, not to be biased, not to misuse official position for self gain, not to be indecisive, to be fair and transparent in dealings and be updated with relevant rules, regulations & procedures.

"The biggest disease is Corruption. The vaccine is TRANSPARENCY."

Glimpse from Quarterly Interaction Meetings...

28th QIM held at SPM, Narmadapuram

29th QIM held at SPP, Hyderabad

FOUR FACETS OF

- By CHO Vigilance Department

Security Printing and Minting Corporation of India Limited (SPMCIL) is committed to fight against corruption by helping management in creating transparent, honest and efficient organizational culture through the system improvement, awareness, timely detection of deviation of rules and speedy investigation of malpractices with impartiality and professional competence.

Vigilance working in SPMCIL has four facets:

(i) Preventive Vigilance

(ii) Participative Vigilance

(iii) Punitive Vigilance

(iv) Pro-active Vigilance.

Preventive Vigilance

a. **Monthly Dissemination of Information Report:** A monthly report prepared by vigilance department of concerned Unit of SPMCIL, containing details and appropriate action taken against discrepancies/deviations found, if any.

b. **Quarterly Progress Report (QPR) of Works/Purchase, etc:** A quarterly report prepared by vigilance department of the concerned Unit of SPMCIL, containing details of 'progress of the works/purchases done by the Unit in the areas of: civil work, electrical/mechanical work, store purchase, horticulture works, medical equipment, consultancy, service contracts, supply of medicines'.

c. **CTE type Inspections:** Conducted in the Units of SPMCIL at least one per quarter and are carried out as per Manual for Intensive Examination of Works/Purchase Contracts for PSUs, Autonomous Bodies, Banks, Insurance Companies and Financial Institutions uploaded on website by Central Vigilance Commission (CVC).

d. **Annual Physical Verification (APV) of Stock:** Done by a team of SPMCIL vigilance department of the stocks held by Units of SPMCIL on annual basis and its report submitted to the Competent Authority, containing details of discrepancies and deviations observed, if any, during the APV and appropriate action taken against such deviations/discrepancies. On an average, there is one APV done every month.

e. **Dissemination of Rules, Regulations and guidelines of CVC/Management/Procurement Manual:** Done periodically (once in every quarter) through lectures (including external speakers), seminars, workshops, discussions etc. Release of small handy booklets, namely, 'The Red Book – Do's and Don'ts of Vigilance' (released during Vigilance Awareness Week, 2009), 'Compendium of Vigilance Circulars – First step towards effective vigilance' (released during Vigilance Awareness Week, 2010) and 'Case Studies – An Awakening' (released during Vigilance Awareness Week, 2012), which was given widest possible publicity in SPMCIL, is a step forward in this direction.

f. **Study of Tender Document:** Done monthly by vigilance department of SPMCIL of the Tender documents uploaded on the website of SPMCIL with reference to the Procurement Manual/CVC guidelines, etc. and discrepancy/deviation found, if any, brought to the notice of the concerned department.

g. **Examination of Audit Report:** Done quarterly by vigilance department of the Unit concerned of SPMCIL and necessary appropriate action taken if any vigilance angle observed in the audit paras during scrutiny of the Audit Report.

h. **Surveillance & Detection:** Information from own developed intelligence sources about the misconduct/malpractices having been committed or likely to be committed is gathered by the vigilance department of the Unit.

Pro - Active Vigilance

a. **Surprise observance of Tender opening:** Done during the tender opening process in the Unit of SPMCIL at least once in a month. Discrepancy/deviation found, if any, is reported to the concerned authority for appropriate action.

b. **Surprise inspection of stores, procurement, process of bill payment:** Surprise random inspection of stores or any part thereof, procurement, process of bill payment, etc. done monthly by the vigilance department of the Unit of SPMCIL and appropriate action taken against discrepancy/deviation found, if any.

c. **Surprise inspection of medical bill claims:** Done monthly by vigilance department of the Unit of SPMCIL and appropriate action taken against discrepancy/deviation found, if any.

Punitive Vigilance

Agreed List and List of Officers of Doubtful Integrity: A watch is kept on the complaints/disciplinary cases/court cases, etc. against the officials of the SPMCIL, which forms the basis of preparation of 'List of Officers of Doubtful Integrity and the Agreed List'. The Agreed List is prepared in consultation with Central Bureau of Investigation (CBI).

Participative Vigilance

a. **Observance of Vigilance Awareness Week:** Observed in SPMCIL and all its Units every year during October/November month on the theme circulated by Central Vigilance Commission (CVC). Various activities/competitions are organized during the Week to sensitize employees of the areas prone to corruption and make them aware of the ways to prevent such corruption.

b. **Vendors' Meet:** An interaction meeting organized by vigilance department of the Unit of SPMCIL once in a year, likely to be held during observance of Vigilance Awareness Week, with the vendors/suppliers of the Unit. Problems faced, if any, by vendors/suppliers, especially pertaining to procurement/tendering system maintained by the Unit or release of payment with modalities along with proposed remedial actions, are reported to the competent authority and necessary remedial actions taken to remove such problems/hurdles faced by vendors/suppliers. This meet is held jointly along with the GM or his nominee(s).

c. **Quarterly Interaction Meeting:** Held quarterly by vigilance department of the Unit concerned of SPMCIL with the GM/HoDs or their nominees to discuss various problems of the vigilance department and deficiencies and discrepancies observed, if any, in the system/working of the Unit during the preceding quarter. Subsequently, Minutes prepared of such meetings with actionable points.

d. **Scrutiny of Annual Property Returns:** Done by the vigilance department of SPMCIL to ensure observance of Conduct Rules of the Organization relating to integrity of officials. Appropriate action taken against discrepancy/deviation found, if any.

e. **Watch on sensitive posts:** Sensitive posts of SPMCIL officials are watched for rotational transfer purposes. A report, containing details of transfers due in a year, is submitted by the Unit concerned of SPMCIL by 31st of January every year. Similarly, a report on compliance/non-compliance on rotational transfers of the year is submitted by 31st July every year. Appropriate action taken against discrepancy/deviation found, if any.

"If a country is to be corruption free and become a nation of beautiful minds, I strongly feel there are three key societal members who can make a difference. They are the father, the mother and the teacher."

- A.P.J. Abdul Kalam

Glimpse of in-house activities organised at CHO…

Essay Writing Competition, VAW-2021

Poster Making Competition, VAW-2021

Integrity Pledge ,

VAW-2021

Release of Satarkvani,

VAW-2021

Sh. Amitabh Shah
DGM (Vigilance), CHO

Participative Vigilance

We are at the cross roads as far as tackling the issue of corruption is concerned. The drawing room discussions on corruption no longer remain the same. The discussions and debate on corruption have come to open, in fact, brought to the streets, thanks to the series of scams coming to light and their reaction through public anger, activists' pressure and judicial activism. There is an enormous expectation from the institutions like Central Vigilance Commission and other anti-corruption agencies from all corners. This is a great challenge not only to the CVC, but also to the entire vigilance fraternity to come up to the expectation.

We are very much aware on the spate of scams getting surfaced in recent times covering every aspect of governance and almost every sector. Nevertheless, it is important to understand the historic perspective as well. As long as the world was divided between the two ideologies of East and West, corruption was not a major issue. The two camps were not bothered about corruption. **"Corruption is fine, as long as ...**

you are in my camp" was the attitude of the two super powers. But after the end of the cold war the countries have become interdependent and in this process, the liberalization and the economic reforms thereof paved way for entry of private players in economic development. The outburst of financial irregularities and scams were the result of this situation to cope up with the competition and at the same time profit making.

Public Sector Enterprise

Having adopted the socialist model of democracy, the makers of our Constitution visualised the three pillars, namely, the Legislature, the Judiciary and the Executive for effective functioning of the democracy. The Legislature makes the law within the ambit of the Constitution. The Judiciary interprets the law and also ensures that the basic structure of the Constitution is not tampered with. The Executives, both political executives and the permanent bureaucracy execute the law. It is very interesting to see how the Public Sector Enterprises having to contribute to the mandate of their administrative ministries become part of the third pillar of democracy namely, the Executive.

Having said that the Public Sector contributes in its own way to the democratic process of the nation, it becomes all the more important to ensure that they are well governed and run effectively to achieve their objective and become a purposeful tool in the democratic process. It is in this context, we widely talk about corporate governance.

Essentially, governance or corporate governance has three basic elements **FAT: Fairness, Accountability and Transparency, which make it meaningful.**

Fairness

The first element of FAT - Fairness can be defined as the ability to make judgements free from discrimination, bias and dishonesty. For instance, when it comes to the public sectors, the executives / employees are expected to be fair in their dealings, meaning thereby that all their actions and decisions are free from discrimination, bias and dishonesty After all, it is said, fairness is not an attitude but it is a professional skill that must be developed and exercised.

Accountability

The next element of FAT is Accountability. Accountability is responsibility and answerability to the shareholders and stakeholders on how the company is run in a fair manner while achieving its objectives. We must also remember that in the ultimate analysis, accountability to the shareholders and stakeholders is not only for what we do but also for what we do not do in exercise of our duties.

Transparency

The third element of FAT is Transparency. Sunshine is the best antidote for darkness, it is said. We cannot ensure Accountability without Transparency. It is very important to understand that the only way to ensure transparency is through the documents and records which are generated while taking any decision. One has to borne in mind that the

records, which are generated during the day to day affairs of a public sector company are intended to serve in future for others to view/audit/inspect and examine when necessity arises.

Corporate Governance vis-à-vis Systems

Having seen the components of good corporate governance, namely, Fairness, Accountability and Transparency (FAT), it is important to know how these elements converge. Fairness otherwise implies the manner in which the transactions are conducted which ultimately amounts to the ethical standards followed in the business transactions. In fact, a closer look into this aspect will reveal that the convergence takes place through the 'internal controls' which are in built at every level of decision making and implementation covering every aspect of operation of the organization.

Existence of system is an important factor for exercising internal controls and achieving good corporate governance. However, if the systems are not followed mere existence of such system has no meaning. Therefore, equally important is the fact that such systems in place are followed in spirit. It is in this context, vigilance comes in to the picture to ensure effectiveness of the systems.

Participative Vigilance

It is in this context, the participative vigilance as envisaged by CVC comes into picture. Whose job is it now to ensure that the systems and procedures are effective and yielding the desired results? Isn't it the job of every stakeholder in an organisation?

Every stakeholder has a responsibility to ensure the systems are not exploited for personal gains. The stakeholder can either participate through corrective action or by blowing the whistle.

If we look back and see the journey the Vigilance Awareness Week had undergone with the conceptualisation and promotion by CVC and observance by the organisations / departments with active participation of Civil Society organisations, no wonder, this year's theme is aptly pronounced as "Corruption Free India for a developed Nation". Perhaps, it is just a reminder and reiteration of the real spirit behind the observance of Vigilance Awareness Week, visualised by CVC more than two decades ago, which is participation of everyone to ensure probity in public life.

After all, it is said, war is too dangerous to be left to the Generals and ensuring good governance is too important an activity to be left along to the CVC and the Vigilance fraternity.

Wake up the vigilance officer within!

Nevertheless, there is an easy way of adopting these practices. The story of lamb and tiger is the best example to

understand it. Moving amidst the lambs, the lone tiger behaved like a lamb, until one day another tiger made it realize the fact that it was a tiger and not a lamb. The same way, everyone in the organization should realize that they are vigilance officers in themselves to watch their own acts and deeds, at the first place and then the others.

In the ultimate analysis, the best course of action to adopt is the direction set by Swami Vivekananda: 'Teach yourselves, teach every one, his (or her) real nature, call upon the sleeping soul and see how it awakes. Power will come, glory will come, goodness will come, purity will come, and everything that is excellent will come, when this sleeping soul is roused to self-conscious activity'.

Let us wake up the vigilance officer within and participate. This is the very essence of participative vigilance.

Glimpse of activities organised at IGM, Mumbai & Noida during VAW 2021

Integrity Pledge, IGM-Mumbai

Gramsabha Parel Colony Poster Making, IGM-Mumbai

Banner Display at Mahim, IGM-Mumbai

Cleanliness Drive at IGM, Noida

Nature of Corruption

Corroding the tax system

Corruption weakens the state's ability to tax, in part by undermining the tax system through perceptions of unfairness and favouritism, which can drain state coffers. Corruption also distorts government spending by promoting oversize, wasteful projects that generate kickbacks, to the detriment of investments in areas like health and education that have a positive economic and social impact. And since the poor rely more heavily on government services, these distortions disproportionately affect them and limit their economic opportunities.

Impeding sustainable and inclusive growth

Sustainable and inclusive growth is also jeopardized if the government is unable to ensure a business environment based on impartiality and the rule of law. Bribes make investments more expensive—when corruption is systemic, bribery acts as a tax on investment. And if corruption spills over to financial sector regulation and supervision, financial stability could also be at risk.

Weakening the bonds of trust

Corruption can lead to mistrust of government and divisiveness in a country, which in turn has an indirect effect on stability and inclusive growth. For example, when young people see few rewards for investing in skills and education, it both shrinks prospects for increased productivity and fuels resentment.

How does corruption affect the economy?

IMF research shows that reducing corruption is associated with higher economic growth: sliding down from the 50th to 25th percentile in an index of corruption or governance is associated with a fall in the annual rate of growth of GDP per capita by half a percentage point or more, and a decline in the investment-to-GDP ratio by 1½–2 percentage points.

Reference:- from IMF https://www.imf.org/external/pubs/ft/ar/2018/eng/spotlight/reducing-corruption/

Glimpse of outreach activities organised at P&T School...

Winners of Poster Competition, VAW-2021

Winners of Essay Writing Competition, VAW-2021

Dy. CVO presenting award, VAW-2021

Dy. CVO with winners P&T School, VAW-2021

WAYS TO REDUCE CORRUPTION...

1. **Education:** with help of education, we can reduce corruption. According to a survey conducted by the India today the least corrupt state is Kerala. Reason being that Kerala literacy rate is highest in India. So we can see how education effects the people. In the most of the states large number of people are uneducated in India. If all are educated and know the rules, public rights etc corruption can be reduced.

2. **Change in Government Process:** no politician should be elected the persons who have criminal records. If we see the record of politicians, so many are involved in so many cases of bribery, murders, and so many illegal things. Still they are contesting in the election and wit the muscle power or money power they will be back to the important ministerial posts. Punishment to all the who are involved in the corrupt practice should be same. There should not be any the police or courts. But Politicians can influence the judiciary, Police and get away from the punishment.

3. **Lack of transparency and professional accountability is yet another big reason:** We should be honest to ourselves. Until and Unless we will not be honest, we cannot control corruption. If everybody is honest automatically corruption will disappear in the offices at least.

4. **Lack of effective corruption treatment is another reason:** There are so many Acts? Because of weak actions and proceedings towards corrupt people. People do not have any fear of this acts and the court. Any act should be implemented and executed in such a way nobody will escape from it.

5. We can reduce corruption by increasing direct contact between government and governed E-governance could help a lot towards this direction.

6. Fixing CCTV cameras in all the places, where financial dealing with public is there. That CCTV should work continuously. A person has to be appointed to see alt he data and catch the person who is offering money or who is receiving the money. Immediate action to be taken on the spot.

7. Control can be only possible if people can understand and start to believe the values of ethics and morality in their life.

8. Foolproof laws should be made so that there is no room for discretion for politicians and bureaucrats. The role of the politicians should be minimized.

9. People should have a right to recall the elected representatives if they seem them becoming indifferent to the electorate.

Excerpt from: OIL ‘s In Touch, 2015

Glimpse of outreach activities organised at Ramjas College

Guidelines Issued by Vigilance Department

Vigilance Department of SPMCIL has issued twelve circulars from the period of September, 2021 to September 2022. The details of which are elaborated below:-

a) <u>Circular No. 10/21:</u> Issuance of Suitability-reg:-

Circular was issued advising all units to issue suitability report by mentioning both testing of the Technical Specifications as well as taking machine trial runnability/Printability, as per approved SOP/ Quality assurance process mentioned in tender document.

b) <u>Circular No. 11/21:</u> Timely finalization of Departmental Inquiry Proceedings – improving vigilance administration.

Copy of guidelines issued by Central Vigilance Commission regarding Timely finalization of Departmental Inquiry Proceedings – improving vigilance administration was circulated to all concerned.

c) <u>Circular No. 12/21:</u> Testing of technical parameters during PDI – reg.

Circular was issued advising all Units that during PDI inspection, parameters for which test facility is not available at firm's site, the same should be carried out either at SPMCIL lab (if facility available) or any other NABL certified lab in concurrence with the Unit concerned.

d) <u>Circular No. 01/22:</u> Central Vigilance Commission Instructions on timely completion of departmental inquiries procedure- reg.

A copy of circular no. 01/01/22 dated 12.01.2022 issued by Central Vigilance Commission regarding timely completion of departmental inquiries-procedure, was circulated to all concerned.

e) <u>Circular No. 02/22:</u> Central Vigilance Commission Instructions on obtaining documents from CBI for the purpose of departmental inquiry proceedings-reg.

A copy of circular no. 03/01/22 dated 12.01.2022 issued by Central Vigilance Commission regarding obtaining documents from CBI for the purpose of departmental inquiry proceedings, was circulated to all concerned for information and necessary action.

f) <u>Circular No. 03/22:</u> Vigilant India: Leveraging technology in structure and processes -reg.

A Copy of presentation given by Shri Sandeep Baldava, Senior Partner, Forensic and Integrity Services, E&Y India on the subject; "Technology as an enabler and Way Ahead-Role of vigilance professionals" made during the panel discussion at joint conference of CVC CBI at Kevedia on 20.10.2021 on topic of "Vigilant India: Leveraging Technology in structures and processes", was circulated to all concerned for information.

g) <u>Circular No. 04/22:</u> Central Vigilance Commission's circular no. 01/02/2022-reg.

A copy of circular no. 01/02/22 dated 04.02.2022 issued by Central Vigilance Commission wherein commission has provided clarification in respect of CVC Circular No. 03/03/2017 dated 10.03.2017, was circulated to all concerned for information and necessary action.

h) <u>Circular No. 05/22:</u> Central Vigilance Commission's circular no. 11/03/2022-reg.

A copy of circular no. 11/03/22 dated 21.03.2022 issued by Central Vigilance Commission regarding implementation of final penalty orders and submission of compliance report, was circulated to all concerned for information and necessary action.

i) <u>Circular No. 06/22:</u> Regarding display of date of manufacturing & date of expiry on ink containers.

During Annual Physical Verification of stocks at one of the Unit, it was observed that date of expiry of ink was not mentioned and only date of manufacturing was displayed.

Considering the fact that, the ink has limited shelf life, both the manufacturing as well as expiry dates should be clearly mentioned on the containers along with gross weight. Units of SPMCIL are advised to make sure that the same practice is followed strictly. Further, Units which are using ink should ensure proper mechanism of recording of expiry date so that the ink could be used within its shelf life based on its requirements and prevent/ safeguarding from being obsolete.

j) <u>Circular No. 07/22:</u> Central Vigilance Commission Circular No 15/07/22-reg.

A copy of circular no. 15/07/22 dated 29.07.2022 issued by Central Vigilance Commission regarding intimation of CVC and CBI in cases pending for sanction of prosecution, was circulated to all concerned for information and necessary action.

k) <u>Circular No. 08/22:</u> Central Vigilance Commission Circular No 14/07/22 dated 11.07.2022-reg.

A copy of circular no. 14/07/22 dated 11.07.2022 issued by Central Vigilance Commission regarding “Updation of Manual on Procurement of Goods, Services, Works and Consultancy, etc.”, was circulated to all concerned for information and necessary action.

l) <u>Circular No. 09/22:</u> Central Vigilance Commission Circular No 19/09/22 dated 05/09/2022-reg.

A copy of circular no. 19/09/22 dated 05.09.2022 issued by Central Vigilance Commission regarding “Revised Guidelines on Intensive Examination of Public Procurement Contracts 2022”, was circulated to all concerned for information and necessary action.

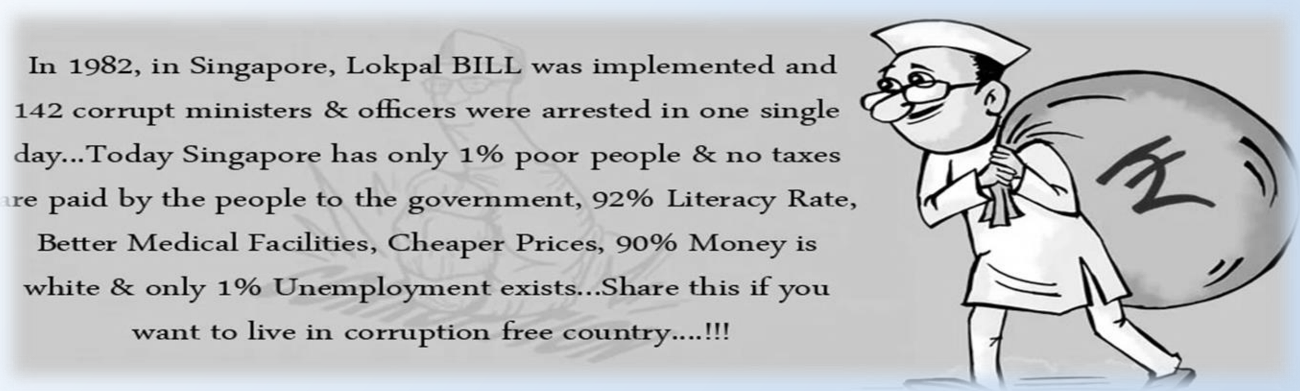

सकारात्मक गुणों का विकास

श्री सचिन अग्रवाल
कंपनी सचिव

शेक्सपियर ने कहा था, **"अच्छा या बुरा कुछ भी नहीं है लेकिन सोच इसे ऐसा बनाती है।"**

जब कुछ ऐसा नहीं होता जैसा हम चाहते हैं, तो निराशा, जलन, चिंता, क्रोध या भय के साथ हम अक्सर अपने लिए और दूसरों के लिए दुख पैदा करते हैं। यदि हम सकारात्मक गुणों का विकास करते हैं तो जीवन अधिक सुचारू रूप से प्रवाहित होगा।

नकारात्मक गुणों को कम करना और सकारात्मक गुणों को विकसित करना दो अलग-अलग चीजें नहीं हैं। जब मन क्रोध, घृणा और स्वार्थ में लिप्त होता है तो शरीर में ऊर्जा का प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है। अपने मन को शुद्ध रखें और आप देखेंगे कि ऊर्जा कितनी आसानी से प्रवाहित होती है। जीवन हर समय हमें वह नहीं देगा जो हम चाहते हैं। जीवन समंदर की तरह ज्वार-भाटे से भरा है...सबकी नाव ऊपर-नीचे होतीरहती है। कोई भी हर समय खुश नहीं रह सकता। कभी-कभी हम दुखी हो जाते हैं और उस समय हमारी उदासी हमारे आस-पास के लोगों पर प्रक्षेप करती है, जो समस्या या असंतोष पैदा करती है।

मन हमेशा विभिन्न चरणों से गुजरता है, कभी नकारात्मक तो कभी सकारात्मक। जब मन नकारात्मक में वास करता है, तो हमें इसका कारण खोजना होगा। हमेशा कुछ स्वार्थ होता है जो नकारात्मकता पैदा करता है। असंतोष तब शुरू होता है जब हमें वह नहीं मिलता जो हम चाहते हैं।

यदि कोई व्यक्ति पहाड़ पर चढ़ना चाहता है और यह सोचना शुरू कर देता है कि वह कितना कमजोर है, उसका आहार कितना खराब है या उसका मन कितना अशुद्ध है, तो वह व्यक्ति बहुत दूर नहीं जा सकता। हमें अपने लक्ष्य में सकारात्मक, उत्साही, साहसी और दृढ़ रहना होगा। ये बातें सिखाई नहीं जा सकतीं। अहंकार, मोह और क्रोध को कम करने से इन चीजों का विकास होता है।

स्वयं में सकारात्मक दृष्टि की शक्ति निम्नलिखित गुणों व मूल्यों को विकसित कर की जा सकती है:

(i) आत्मविश्वास – जो जैसा सोचता है, वैसा ही बन जाता है। अपनी क्षमताओं व योग्यताओं में यकीन रखना आत्म विश्वास है । आत्मविश्वासी व्यक्ति स्वयं को दुर्बल न बनाकर सबल मानता है। आत्मविश्वास के उदाहरण दृष्टव्य है – एक बार एक विद्यार्थी को परीक्षा में अनुत्तीर्ण बताया गया। उसने शिक्षक से कहा–मैं अनुत्तीर्ण नहीं हो सकता, रिजल्ट पुनः देखिए। मुझे अपने उत्तर सही होने पर पूर्ण विश्वास है। परीक्षाफल की पुनः जाँच करने पर पाया गया कि छात्र सर्वोत्तम अंकों से उत्तीर्ण हुआ है। सभी शिक्षकों एवं प्राचार्य ने छात्र के आत्मविश्वास को सराहा। वह छात्र थे भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।

(ii) अनुशासन – जीवन में अनुशासन बनाये बिना सकारात्मक गुणों का विकास नहीं हो सकता। पहले व्यक्ति को एक लक्ष्य विकसित करना चाहिए और उस लक्ष्य की ओर नियमित रूप से बढ़ना चाहिए। सहानुभूतिपूर्ण हृदय विकसित करके, व्यवहार में विनम्रता और कार्यों में निस्वार्थता लाकर कोई भी जीवन की दौड़ जीत सकता है।

(iii) परिश्रम – सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले केवल विचार ही नहीं रखते– वे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनथक परिश्रम भी करते हैं।

(vi) समय प्रबंधन – समय बहुमूल्य है अतः समय पर कामों का निपटारा करने के लिये उसकी योजना (टाइम टेबल) बना लेना आवश्यक है । सकारात्मक सोच रखने वाले मानते हैं कि समय ही धन है।

(v) आशावादी सोच – स्वयं में सकारात्मकता उत्पन्न करने के लिए आशावादी सोच अपेक्षित है न कि ' निराशावादी।

(vi) इच्छा शक्ति की प्रबलता – सकारात्मकता की शक्ति विकसित करने के लिए मनुष्य में इच्छाशक्ति होनी चाहिए। मनोकामनाओं में बलवती इच्छा शक्ति होती है । जहाज डूबने पर तैरकर किनारे तक पहुँचने वाले में प्रबल इच्छा शक्ति आवश्यक होती है।

थामस अल्वा एडीसन जिन्होंने बिजली के बल्ब का अविष्कार किया वे पेट्रोमैक्स में काम करते करते परेशान हो गए थे। उन्हें बार–बार लैंप में मिट्टी का तेल भरना पड़ता था। वे इस झंझट को समाप्त करना चाहते थे। उन्होंने सोचा जब वे कालिख (कार्बन) तेल के चलते जल सकती है तो बिजली के तारों से क्यों नहीं। उन्हें एक उपाय सूझा–क्यों न एक लंबी कालिख को दो तारों के बीच रखकर जलाने का प्रयास किया जाए। उनका फिलामेंट कई बार टूट जाता था। सातवीं बार वे राख को दो फिलामेंटों के बीच स्थापित करने में सफल हुए। उन्होंने जैसे ही स्विच ऑन किया फिलामेंट प्रकाशित हो उठा। इस तरह बिजली के बल्ब का आविष्कार हुआ। यह एडीसन की प्रबल इच्छा शक्ति का उदाहरण है।

(vii) उत्साह व साहस – कायर पुरुष प्रायः डगमगा जाते हैं, जबकि साहसी व्यक्ति आपदाओं पर विजय पा लेते हैं। साहसी व्यक्ति अपने इरादे नहीं बदलते है । उनका उत्साह उन्हें अपने गंतव्य तक पहुँचा देता है ।

(viii) जिम्मेदारी स्वीकारना – सकारात्मकता की शक्ति स्वयं में विकसित करने के लिए जिम्मेदारी को स्वीकर करना चाहिए और जिम्मेदारी को कर्त्तव्य के रूप में लेना चाहिए।

(ix) ईमानदारी – हमारी प्रगति हमारी ईमानदारी पर निर्भर करती है। दूसरे लोग कैसे कार्य करते हैं, इस पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है। अगर किसी चीज पर हमारा नियंत्रण है, तो वह हमारी अपनी प्रतिक्रिया है।

(x) कृतज्ञता – अपनी कृतज्ञता औरों के साथ बांटें। औरों के साथ अपनी कृतज्ञता बांटने से आपको उन भावनाओं को अपने याद में सँजोने में सहायता मिलती है। इससे उन लोगों में भी सकारात्मक भावनाएं उत्पन्न हो सकती हैं जिनसे आप कृतज्ञता साझा कर हैं।

(xi) एकाग्रता – एकाग्रता से दृष्टि लक्ष्य की ओर उन्मुख रहती है। अर्जुन से गुरु द्रोणाचार्य ने पूछा कि क्या पेड़ पर बैठी चिडिया तम्हें दिखाई दे रही है और क्या–क्या दिखाई दे रहा है। धनुर्धर शिष्य अर्जुन ने कहा मुझे तो सिर्फ चिड़िया की आंख ही दिख रही है और कुछ नहीं।

(xii) नेतृत्व – स्वयं में नेतृत्व शक्ति का विकास सकारात्मक क्षमता विकसित करने में सहायक है। नेतृत्व से टीमवर्क तथा अनुयायी हासिल करने में सहायता मिलती है । लीडरशिप पॉजिटिव पर्सनल्टी का विशेष गुण है। यदि आपमें यह गुण है तो असंभव से लगने वाले कार्य भी संभव हो जाते हैं।

(xiii) तनाव मुक्ति – तनाव का प्रभाव सिरदर्द उच्च रक्तचाप, पेट के विकार तथा लक्ष्य प्राप्ति में बाधा के रूप में सामने आता है। तनाव से मुक्ति पाना सकारात्मक शक्ति से संभव है। प्रार्थना, प्रसन्नता, आत्म क्षमता, मिलनसारिता, संगीत, ध्यान, योग आदि तनाव से मुक्ति के उपाय हैं।

(xiv) आत्म सम्मान – आत्म सम्मान या स्वाभिमान का सीधा अर्थ है खुद का सम्मान या अपनी दृष्टि में अपना मूल्य आंकलन । आत्म विश्वास मनुष्य में दुर्गुणों को वश में रखने की लगाम है ।

*****

Glimpse of activities organised at SPM-Narmadapuram during VAW 2021

Integrity Pledge

Poster and Slogan Competition at School

Quiz Competition

Rally

श्री आशीष उपाध्याय
वरिष्ठ पर्यवेक्षक (अनु° एवं वि°),
प्रतिभूति कागज कारखाना, नर्मदापुरम

हमारा संस्थान

राष्ट्र की गौरव गाथा का स्वर्णिम एक इतिहास हैं हम,
देश की आधारशिला जो उस मुद्रा का विकास हैं हम।
गंगा-यमुना मिल जाने से संगम बन जाता हो जैसे
नौ इकाइयों के मिलने से बने हमारा निगम कुछ ऐसे।
देश की स्वायत्ता का अतुलनीय अभिमान हैं हम
प्रतिभूति मुद्रा हो निर्मित ऐसा एक संस्थान हैं हम।
हर चुनौतियाँ चूर-चूर हो, अपने मजबूत इरादों से
अर्थतंत्र के पहिये घूमे, हमारे अमूल्य उत्पादों से।
भारत के जन-मानस का, एक अटूट विश्वास हैं हम
देश की आधारशिला जो उस मुद्रा का विकास हैं हम।
हो संगठित साथ चले हम भारत को नया बनाना हैं,
देश रहे निर्भर खुद पर, एक ऐसा दिन वो लाना है।

अपनी मुद्रा की शक्ति से राष्ट्र निर्माण करेंगे हम
देशभक्ति के भाव से प्रेरित, जन कल्याण करेंगे हम।
मुद्रा की खनक के धुन पर, मोहक एक संगीत बने
देश बने एक भव्य इमारत हम सब नींव की ईंट बने।
पुरस्कार हमसे हो निर्मित करें विभूतियों का सम्मान
चट्टान की भांति खड़े हैं अर्थशास्त्र की हम पहचान
सेनानियों का चक्र हमीं से, रत्न-ए-भारत खास हैं हम,
देश की आधारशिला जो उस मुद्रा का विकास हैं हम।
हिंदुस्तान के हर दिशा में फैला अपरिमित जाल हमारा,
वर्षों से सेवा में समर्पित अटल खड़ा टकसाल हमारा।
दिखता अनुभव वरिष्ठजनों का प्रतिभा दिखे जवानों में
इस समन्वय के मिश्रण से बनता कागज कारखानों में।
निष्ठा, सेवा, त्याग, परिश्रम, बसता हर परिवेश में
सतत् समर्पण, सेवाभाव लक्ष्य बैंक नोट प्रेस में।
पारदर्शिता तकनीकी और सुरक्षा अपनाते हैं हम
उत्पादों की गुणवत्ता से निगम की शान बढ़ाते हैं हम।
सोच सदैव शिखर पाने की, उम्मीदों का आकाश हैं हम,
देश की आधारशिला जो उस मुद्रा का विकास हैं हम।

"व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित एक प्राणी है,

वह जो सोचता है, वही बन जाता है।"

Glimpse of activities organised at CNP-Nashik during VAW 2021

Integrity Pledge

Pledge Taking in School

E-lecture

Essay Competition at School

Award Winning Essay of VAW 2021

रश्मि कौशिक
कार्यालय सहायक, राजभाषा

"स्वतंत्र भारत @75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता"

**"सत्यनिष्ठा से स्वतंत्र भारत में आत्मनिर्भरता लाएँगे
कुछ इस तरह हम सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाएंगे।"**

प्रस्तावना/ भूमिका:

वर्तमान में हम स्वतंत्र भारत की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। सत्य की राह पर चलकर भारत को आत्मनिर्भर बनाने का सपना राष्ट्रपति महात्मा गाँधी द्वारा देखा गया था। वो स्वदेशी पर ज़ोर देकर आत्मनिर्भरता को सच होते देखना चाहते थे।

हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने वर्ष 2020 में कोविड काल के दौरान आत्मनिर्भर भारत का उल्लेख किया था। आत्मनिर्भर भारत मोदी जी की दृष्टि (विजन) है।

सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता का अर्थ है सत्या की राह पर चलकर आत्मनिर्भरता बनना। शास्त्रों में कहा गया है:

"सर्व परवंश दुखः
सर्व आत्म वंश सुखः"

अर्थात हर समय दूसरों पर निर्भर रहना दुखः का कारण है। आत्मनिर्भर होकर कार्य करना सुखः का कारण है।

सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ता भारत:

आज़ादी के बाद भारत आर्थिक दृष्टि से बेहद कमज़ोर स्थिति में था, परंतु स्वतंत्र भारत ने सत्य की राह पर चलते हुए काफी नेत्रों में आत्मनिर्भरता बनने की कोशिश की है और सफल भी हुआ है।

"लेकर सत्यनिष्ठा जा संकल्प,
स्वतंत्र भारत को पहनाएंगे आत्मनिर्भरता का आकल्प।"

आई.टी. के क्षेत्र में मुकाम:-

भारत ने आई.टी. के लहराते हुए अनेक उपलब्धियाँ हासिल की हैं। जैसे "बंदे मातरम रेल" यह रेल भारत की पटरी पर दौड़ी, तो आत्मनिर्भर भारत का सपना पूरा होने की दिशा में सराहनीय कदम था।

अन्तरिक्ष में परचम:-

भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा, इसरो (ISRO) द्वारा अन्तरिक्ष में भी आत्मनिर्भर भारत का सपना पूरा करने की कोशिश की गई। चंद्रमान-2 को अन्तरिक्ष के दक्षिणी ध्रुव पर उतारने की कोशिश इसमें प्रशंसनीय कदम था।

सैन्य शक्ति का विस्तार:-

सत्यनिष्ठा की राह पर सैन्य शक्ति का अभूतपूर्व विस्तार किया गया है। इसमें अब राफेल भी शामिल है। "ब्रह्मोस" को भारत व रूस ने मिलकर विकसित किया है।

एशिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था:-

आज़ादी के बाद भारत की स्थिति आर्थिक रूप से कमजोर थी परंतु वर्तमान में भारत एशिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था है। यह आत्मनिर्भरता की ओर महत्वपूर्ण कदम है।

कृषि क्षेत्र का विस्तार:-

स्वतंत्रता के बाद भारत ने आत्मनिर्भर बनकर नए नए आयाम स्थापित की है, जैसे अब भारत विश्व में दालों का सबसे बड़ा अत्पादक है।

इन सबके अलावा भी अनेक क्षेत्रों में भारत ने सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता की ओर अनेक कदम बढ़ाये हैं।

जैसे:- मेक इन इंडिया के अंतर्गत SPMCIL ने अपनी इकाई में स्याही, कागज़ (नोट पेपर) का उत्पादन शुरु किया है।

"सत्यनिष्ठा होकर फिर नया स्वप्न सजाना है, स्वतंत्र कराया जिस भारत को उसे आत्मनिर्भर बनाना है।"

सत्य की राह पर चलना अत्यंत कठिन है, इसलिए सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भर बनना मुश्किल, चुनौतीपूर्ण है, लेकिन हमें इसकी शुरुआत अपने घर से बच्चों से करनी होगी, जिससे भारत का सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भर बनने का सपना पूरा होगा। स्वरोजगार की पहल भी युवाओं में आत्मनिर्भरता का संचार करती है।

"आत्मनिर्भर हर समस्या का हल है,
आत्मनिर्भर भारत हर युवा का कल है,
सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता को बढ़ाना है,
भारत को पुनः विश्वगुरु बनाना है। "

उपसंहार/ निष्कर्ष:-

आज़ादी के 75 साल बाद भारत सत्यनिष्ठ होकर उनके क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बना है, परंतु अभी अनेक क्षेत्रों में सत्य की राह पर चलकर आत्मनिर्भर होना बाकी है। स्वदेशी अपनाकर हम इस दिशा में एक अच्छी पहल कर सकते हैं। घर-परिवार, समाज से पहल कर, इसकी शुरुआत करके सरकार को मदद कर सकते हैं। घर में बच्चों को सत्यनिष्ठा का बोध करा कर उन्हें अपने छोटे छोटे कार्य स्वयं करने को प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे भारत को समाज को आत्मनिर्भर होने में मदद मिलेगी।

"अब हमारा एक ही सपना, आत्मनिर्भर हो भारत अपना।"

"आज़ाद भारत का 75वां जश्न मनाएंगे, सत्या की राह पर चलकर भारत को आत्मनिर्भर बनाएँगे।"

"सत्यनिष्ठा से स्वदेशी अपनाकर स्वतंत्र भारत को आत्मनिर्भर बनाना है।"

*****

Glimpse of activities organised at IGM-Kolkata during VAW 2021

Display of Banner at Mint Gate

Integrity Pledge

Slogan Writing Competition

Gramsabha

श्री हरीश कुमार
कार्यपालक सचिव,
भा. प्र. मु. मु. नि. नि. लि.

एक दूजे के साथ

एक दूजे के साथ
चलो संग संग मिलके यार
दूर करो ये भ्रष्टाचार॥

थोड़ी मुश्किल तो आएंगी
कदम ठोकरें भी खाएँगी॥

तब तक मंज़िल न पाएंगे
हम तो चलते ही जाएंगे॥

न मानेंगे अब हम हार
दूर करेंगे ये भ्रष्टाचार ...

जय हिन्द॥

Glimpse of activities organised at ISP-Nashik during VAW 2021

Ceremony

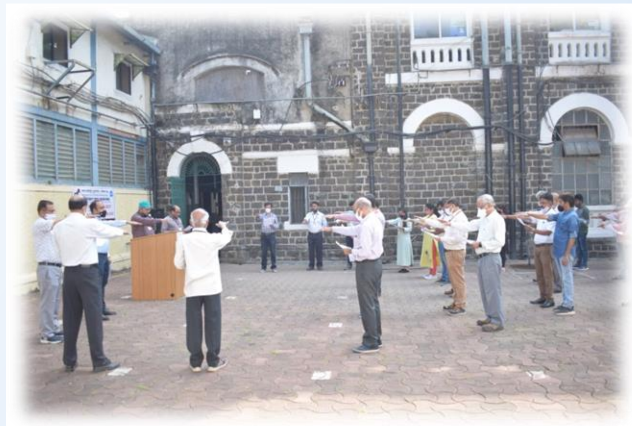

Integrity Pledge

Cleanliness Drive

Rangoli Making Competition

केंद्रीय सतर्कता आयोग

संप्रीत कौर
वरिष्ठ कार्यालय सहायक

भ्रष्टाचार किसी भी राष्ट्र के प्रगति के पथ में पड़ने वाला ऐसा रोड़ा है जिससे टकराने पर राष्ट्र अपाहिज हो सकता है। इस बात को भारत सरकार बखूबी जानती है और उससे निपटने के लिए समय–समय पर कानूनों एवं आयोगों का गठन भी करती रहती है। इसी क्रम में भारत सरकार ने 2004 के "लोकहित प्रकटीकरण एवं मुखबिर संरक्षण" पर केन्द्रीय सतर्कता आयोग को भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई के लिए एक "नामित एजेंसी" के रूप में प्राधिकृत (अधिकार दिया) किया।

परिचय

केंद्रीय सतर्कता आयोग को सर्वोच्च सतर्कता संस्थान माना जाता है, जो किसी भी कार्यकारी प्राधिकरण के नियंत्रण से मुक्त है, केंद्र सरकार के तहत सभी सतर्कता गतिविधियों की निगरानी करता है और केंद्र सरकार के संगठनों में विभिन्न प्राधिकरणों को उनके सतर्क कार्य की योजना बनाने, क्रियान्वित करने, समीक्षा करने और सुधार करने की सलाह देता है। केंद्र सरकार की एजेंसियों को सतर्कता के क्षेत्र में सलाह देने और मार्गदर्शन करने के लिए श्री के.संथानम की अध्यक्षता में भ्रष्टाचार निवारण समिति की सिफारिशों पर फरवरी, 1964 में सरकार द्वारा केंद्रीय सतर्कता आयोग की स्थापना की गई थी।

राष्ट्रपति द्वारा एक अध्यादेश की घोषणा के परिणामस्वरूप, केंद्रीय सतर्कता आयोग को 25 अगस्त, 1998 से "वैधानिक स्थिति" के साथ एक बहु सदस्यीय आयोग बनाया गया ।

केंद्रीय सतर्कता आयोग का विजन और मिशन

विजन
सर्वोच्च अखंडता संस्थान के रूप में, आयोग को भ्रष्टाचार से लड़ने और लोक प्रशासन में अखंडता सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य है।

मिशन
शासन प्रक्रियाओं में अखंडता को बढ़ावा देने के लिए:

- भ्रष्टाचार विरोधी कानूनों और विनियमों के त्वरित प्रवर्तन के माध्यम से भ्रष्टाचार के खिलाफ एक विश्वसनीय प्रतिरोध का निर्माण
- भ्रष्टाचार के दायरे को कम करने के लिए प्रभावी निवारक उपाय करना।
- नैतिक मूल्यों को विकसित करने और भ्रष्टाचार के प्रति समाज की सहनशीलता को कम करने के लिए जन जागरूकता बढ़ाना।

केंद्रीय सतर्कता आयोग का इतिहास

द्वितीय विश्व युद्ध के समय वर्ष 1941 में भारत सरकार द्वारा एक विशेष पुलिस स्थापन का निर्माण किया गया जिसका मुख्य कार्य युद्ध के दौरान भारत के युद्ध और आपूर्ति विभाग में व्याप्त रिश्वतखोरी तथा भ्रष्टाचार से संबंधित मामलों का जांच करना था।

सितम्बर 1945 में युद्ध की समाप्ति के बाद भी भारत सरकार को एक ऐसी संस्था की आवश्यकता महसूस हो रही थी जो कर्मचारियों के रिश्वतखोरी तथा भ्रष्टाचार के मामलों की जांच कर सके। इस उद्देश्य के मद्देनजर भारत

सरकार ने दिल्ली विशेष पुलिस स्थापन अधिनियम, 1946 को लागू करके, सभी विभागों को इसके दायरे में लाकर इसके कार्य क्षेत्र को बढ़ा दिया। भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम, 1947 के तहत यह एजेंसी 1963 तक रिश्वत खोरी तथा भ्रष्टाचार का अन्वेषण करती रही।

1963 के बाद केंद्र सरकार को एक ऐसी केंद्रीय पुलिस एजेंसी की आवश्यकता महसूस होने लगी जो रिश्वत और भ्रष्टाचार के मामलों के साथ–साथ निम्नलिखित मामलों का भी अन्वेषण कर सके-

- केंद्र सरकार के राजकोषीय कानूनों के उल्लंघन का।
- पासपोर्ट में धोखाधड़ी का अन्वेषण।
- समुद्र तथा हवाई जहाज में होने वाले अपराध।
- केंद्र सरकार के विभागों में होने वाली धोखाधड़ी। इत्यादि

1 अप्रैल, 1963 को के. संथानम की अध्यक्षता में गठित भ्रष्टाचार निरोधक समिति के सुझाव पर केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरोकी स्थापना की गई। वर्ष 1964 में इसी समिति की सिफारिशों पर केंद्र सरकार द्वारा केंद्रीय सतर्कता आयोग का गठन किया गया। उस समय इसका कार्य केंद्र सरकार को सतर्कता मामलों में सलाह देना तथा उनका मार्गदर्शन करना था। वर्ष 1998 में केंद्रीय सतर्कता आयोग को एक अध्यादेश के माध्यम से सांविधिक दर्जा दिया गया तथा केंद्रीय सतर्कता आयोग अधिनियम 2003 के माध्यम से इसके सांविधिक दर्जे को वैधता प्रदान कर दिया गया। अब यह एक बहु सदस्यीय संस्था बन चुका था। इसमें एक मुख्य सतर्कता आयुक्त (अध्यक्ष) तथा दो अन्य सतर्कता आयुक्तों (सदस्य) की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा किया जाता है।

केंद्रीय सतर्कता आयोग के कार्य

केंद्रीय सतर्कता आयोग को एक ऐसी संस्था के रूप में नामित किया गया है जो रिश्वतखोरी, कार्यालयों के दुरुपयोग तथा भ्रष्टाचार संबंधित शिकायतों

को सुनता है तथा उनपर त्वरित रूप से उचित कार्रवाई की सिफारिश भी करता है। केंद्रीय सतर्कता आयोग के पास केंद्र सरकार, लोकपाल तथा मुखबिर/सूचना प्रदाता/सचेतक अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं। केंद्रीय सतर्कता आयोग खुद से मामलों का अन्वेषण नहीं करता है। यह केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो तथा मुख्य सतर्कता अधिकारियों द्वारा जाँच/अन्वेषण का कार्य कराता है।

यह आयोग वार्षिक रिपोर्ट के माध्यम से अपने किए गए कार्यों तथा उन प्रणालीगत विफलताओं का विवरण देती है जिनके फलस्वरूप विभागों में भ्रष्टाचार पनप रहा है।

"भ्रष्टाचार के खिलाफ न्याय के लिए लड़ाई आसान नहीं है. ना ये कभी आसान थी ना कभी होगी"

-फ्रैंक सेर्पिको

Glimpse of activities organised at SPP & IGM Hyderabad during VAW 2021

Integrity Pledge, SPP-Hyderabad

Essay Writing Competition, SPP-Hyderabad

Quiz Competition, SPP-Hyderabad

Pledge at Administrative Building, IGM-Hyderabad

Vision and Mission of Vigilance Department

Vision

To adopt a preventive & proactive approach for continuous improvement in the systems and procedures thereby building the image of the company by infusing transparency and integrity in the work environment.

Mission

- Disseminate rules, procedures and guidelines of CVC & SPMCIL Vigilance Department for creating awareness in the system.
- Preventive checks through CTE Type Inspections, APV of stocks, Audit Reports & other Periodic Inspections including Surprise Inspections.
- Issuance of circulars for improving deficiencies in the system and apprising management for updating of Procurement Manual as the need be.

- Periodical Interaction Meetings/Workshops/Seminar/Training for the officials.
- Holding vendors meet.
- Periodical study of tender documents uploaded on website, checking of bills, observance of tender opening, etc.
- Periodic reports on compliance of laid down rules, procedures and guidelines.
- Leveraging of Information Technology like uploading of tenders in downloadable forms, post-award details, e-payment details, online complaints etc on website.
- Sensitive posts, Agreed List & List of Officers of Doubtful Integrity.
- Timely, promptly and Unbiased processing of Cases.

Glimpse of activities organised at BNP-Dewas during VAW 2021

Integrity Pledge

Essay Competition at School

Quiz Competition

Cleanliness Drive

Repatriation from Vigilance Department

Sh. Sunil Tiwari
Dy. CVO

Sh. R N Bhalerao
Sr. Supervisor
(Vig.), ISP-Nashik

Sh. Prabhat Kumar Thakur
Supervisor (Vig.)

Sh. R P S Kainth
Executive Secretary
to CVO

New Joiners in Vigilance Department

Sh. S. P. Gandam
Dy. CVO

Nihan Siddiqui
Supervisor (Vigilance), CHO

Sh. Deokant Mishra
Supervisor (Vigilance), ISP-Nashik

Sh. Raghuvir Singh Kaintura
AM (SS) to CVO

CHO VIGILANCE TEAM

Sh. Vinay Kumar Singh
IRS, CVO

Sh. S. P. Gandam
Dy. CVO

Sh. Amitabh Shah
DGM (Vigilance)

Sh. B. Rajashekhar
Manager (Vigilance)

Sh. Sumit Kohli
Sr. Supervisor

Nihan Siddiqui
Supervisor

Sh. Akash Saxena
Supervisor

Sh. R S Kaintura
AM (SS) to CVO.

Ms. Ganga Sharma
Secy to Dy. CVO

Ms. Manika Rawat
Sr. OA

Ms. Sampreet Kaur
Sr. OA

Quiz

1. **When was Central Vigilance Commission setup?**
2. **Who is the current Central Vigilance Commissioner?**
3. **There is only one state in India which is excluded from India's RTI act. Which is the state ?**
4. **Which Committee recommended establishing the Chief Vigilance Commission in India?**
5. **Who was the first Central Vigilance Commissioner?**
6. **Unselfishness is more paying, only people do not have the patience to practice it "- Who said this ?**
7. **Which is the apex body of Government of India to address government corruption?**
8. **In which year was the Right to Information Act passed in India ?**

Answers

1. 1964 **2.** Sh. Suresh Patel **3.** Jammu & Kashmir **4.** Santhanam Committee **5.** Sh. Nittoor Srinivasa Rao **6.** Swami Vivekanand **7.** CVC **8.** 2005

IGM, Noida

IGM, Hyderabad

SPP, Hyderabad

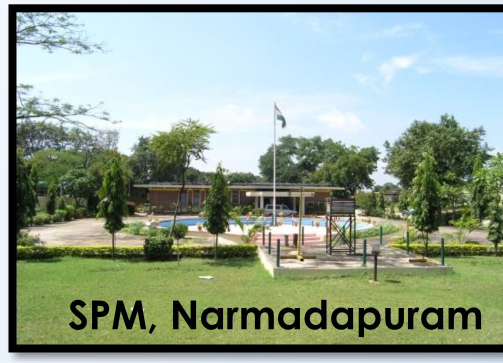
SPM, Narmadapuram

IGM, Mumbai

IGM, Kolkata

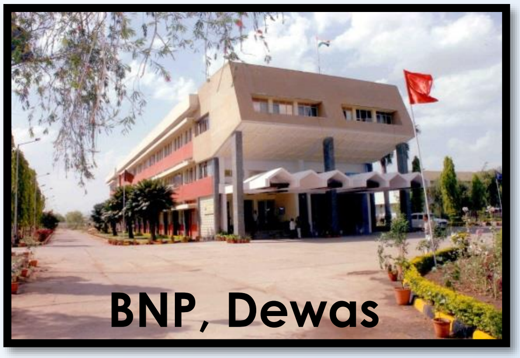
BNP, Dewas

CNP, Nashik

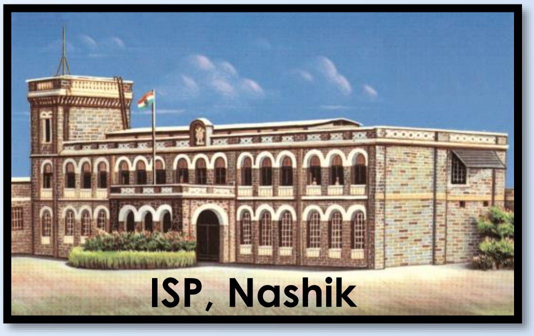
ISP, Nashik

॥ चाणक्य ॥

**"Wisdom raises the quality of governance,
The wisdom is the combination of theory and practice. It makes the ruler more capable and more efficient."**